एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 05, अंक: 05 (सितम्बर-अक्टूबर, 2025)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

बिहार में ड्रैगन फ्रूट उत्पादन: जलवायु, मिट्टी और देखभाल

कुमार साकेत[1] एवं *आशुतोष कुमार[2]

[1]उद्यान विज्ञान (फल विज्ञान) विभाग, नैनी कृषि संस्थान, शुआत्स, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत

[2]पादप प्रजनन एवं आनुवंशिकी विभाग, बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर, बिहार, भारत

*संवादी लेखक का ईमेल पता: ashutoshkumar0927@gmail.com

ड्रैगन फ्रूट (*हायलोसेरेस अंडाटस*), जिसे कमलम या पिताया भी कहा जाता है, एक महत्वपूर्ण उष्णकटिबंधीय फल है। यह संतरा, आम, पपीता, केला आदि की तुलना में अधिक पौष्टिक है (सेंगर, 2024)। बाहर से यह अनानास जैसा और अंदर से कीवी या नाशपाती की तरह दिखाई देता है। इसका गूदा सफेद या लाल होता है जिसमें छोटे-छोटे काले बीज होते हैं। इसका मूल स्थान मैक्सिको और मध्य अमेरिका है, लेकिन अब यह भारत में भी लोकप्रिय हो रहा है (मेरी खेती, 2025; सालुंखे, 2024)। बिहार की जलवायु और मिट्टी इसे बड़े पैमाने पर अपनाने योग्य बनाती है (प्रकाश कुमार, 2025)।

यह कैक्टस परिवार (Cactaceae) का सदस्य है और इसके प्रमुख प्रकार हैं:

1. *हायलोसेरेस अंडाटस* – सफेद गूदा, गुलाबी छिलका
2. *हायलोसेरेस कोस्टारिसेन्सिस* – लाल गूदा, गुलाबी छिलका
3. *हायलोसेरेस मेगालैंथस* – सफेद गूदा, पीला छिलका (निहारिका, 2025)।

भारत में पंजाब, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश आदि राज्यों में इसकी खेती तेजी से बढ़ रही है (रमनजोत, 2025)।

जलवायु और मिट्टी की आवश्यकताएँ

ड्रैगन फ्रूट की खेती के लिए उष्ण जलवायु सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है। पौधा 10–40 डिग्री सेल्सियस तापमान सह सकता है, लेकिन 20–30 डिग्री सेल्सियस सबसे उपयुक्त है (सेंगर, 2024)। इसे 50 सेमी से अधिक वार्षिक वर्षा की आवश्यकता होती है, लेकिन जलभराव नुकसानदेह है (मेरी खेती, 2025)।

मिट्टी की दृष्टि से बलुई दोमट और अच्छी जलनिकासी वाली भूमि उपयुक्त है। pH मान 5.5–7 होना चाहिए (सालुंखे, 2024)। बिहार की दोमट भूमि इसके लिए अत्यंत उपयुक्त है (प्रकाश कुमार, 2025)।

चित्र 1: लाल गूदे वाला ड्रैगन फ्रूट

चित्र 2: खेत में ड्रैगन फ्रूट के पौधे

खेती की विधि

पौधों की तैयारी और रोपण: यह मुख्य रूप से कटिंग से होती है। 20–30 सेमी लंबी कटिंग को छाया में सुखाकर गड्ढों में लगाया जाता है (सेंगर, 2024)। फरवरी से मई तक समय उत्तम है।

खेत की तैयारी: खेत की गहरी जुताई, 2.5 मीटर की दूरी पर 40x40x40 सेमी गड्ढे और गोबर की खाद डालकर पौधे लगाना चाहिए (मेरी खेती, 2025)।

सिंचाई: जड़ें अधिक पानी सहन नहीं कर पातीं। गर्मियों में सप्ताह में दो बार और सर्दियों में 10–15 दिन में सिंचाई करनी चाहिए। ड्रिप सिंचाई प्रणाली सर्वोत्तम है (रमन शुक्ला, 2025)।

सहारा देना: यह बेलनुमा फसल है, इसलिए 5–6 फीट ऊँचे खंभों का सहारा देना आवश्यक है (निहारिका, 2025)।

खाद और उर्वरक प्रबंधन: प्रति पौधा 5–10 किग्रा गोबर की खाद, 100 ग्राम नाइट्रोजन, 50 ग्राम फॉस्फोरस और 50 ग्राम पोटाश देना चाहिए। जैविक खेती में वर्मी कम्पोस्ट का प्रयोग लाभदायक है (सालुंखे, 2024; मेरी खेती, 2025)।

रोग और कीट प्रबंधन: तना सड़न रोग नमी की अधिकता से होता है। इससे बचने के लिए जलनिकासी जरूरी है। पत्ती खाने वाले कीट व एफिड्स से बचाव हेतु जैविक कीटनाशक उपयोगी हैं (वनिता सालुंखे, 2024)।

कटाई और उत्पादन: पहली फसल 12–15 महीने बाद मिलती है (सेंगर, 2024)। एक पौधा प्रति वर्ष 40–60 फल देता है। औसतन प्रति हेक्टेयर 10–12 टन उत्पादन संभव है (प्रकाश कुमार, 2025)।

आर्थिक लाभ और बाजार: ड्रैगन फ्रूट का बाजार मूल्य सामान्य फलों से अधिक है। प्रति किलोग्राम मूल्य 200–400 रुपये तक है (रमनजोत, 2025)। औसतन 5–7 लाख रुपये प्रति हेक्टेयर शुद्ध लाभ संभव है (कृषक जगत, 2025)। बिहार सरकार किसानों को प्रोत्साहन व प्रशिक्षण उपलब्ध करा रही है (रमन शुक्ला, 2025)।

बिहार के किसानों के लिए लाभ

- कम पानी में अधिक उत्पादन
- कम देखभाल में भी लाभकारी
- उच्च बाजार मूल्य
- निर्यात की संभावना अधिक (निहारिका, 2025; कृषक जगत, 2025)।

निष्कर्ष

बिहार की जलवायु और मिट्टी ड्रैगन फ्रूट के लिए आदर्श हैं। सरकारी योजनाओं और वैज्ञानिक तकनीकों के प्रयोग से किसान अधिक मुनाफा कमा सकते हैं। यह नई और लाभदायक फसल बिहार के कृषि भविष्य को बदल सकती है (रमन शुक्ला, 2025)।

चित्र 3: ड्रैगन फ्रूट की खेती

चित्र 4: ड्रैगन फ्रूट की तुड़ाई

संदर्भ

1. रमन शुक्ला (2025). *बिहार के 23 जिलों में लागू होगी ड्रैगन फ्रूट विकास योजना.* जागरण।
2. प्रकाश कुमार (2025). *उत्तर बिहार में पांच हेक्टेयर में ड्रैगन फ्रूट का होगा उत्पादन.* जागरण।
3. कृषक जगत (2025). *ड्रैगन फ्रूट की खेती पर बिहार सरकार दे रही 40% सब्सिडी.* कृषक जगत।

4. निहारिका (2025). *बिहार के किसान सीखेंगे ड्रैगन फ्रूट की खेती, सरकार दे रही फ्री ट्रेनिंग*. किसान इंडिया।
5. डॉ. राकेश सिंह सेंगर (2024). *ड्रैगन फ्रूट की खेती से लाखों का मुनाफा*. Farm & Food।
6. मेरी खेती (2025). *ड्रैगन फ्रूट की खेती: लाभ, जलवायु, किस्में और जानकारी*. MeriKheti।
7. वनिता सालुंखे, आदि (2024). *ड्रैगन फ्रूट के रोगों की रोकथाम*. फल-फूल (ICAR पत्रिका)।
8. रमनजोत (2025). *ड्रैगन फ्रूट किसानों की बल्ले-बल्ले*. पंजाब केसरी।
9. ICAR (2023). *हॉर्टिकल्चर रिपोर्ट: विदेशी फलों का भारत में उत्पादन*. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद।
10. कृषि विज्ञान केंद्र, समस्तीपुर (2024). *ड्रैगन फ्रूट उत्पादन पर प्रशिक्षण पुस्तिका*।
11. कृषि विभाग, बिहार (2024). *ड्रैगन फ्रूट विकास योजना गाइडलाइन*।
12. फालफूल पत्रिका (2023). *ड्रैगन फ्रूट: सुपरफूड का बढ़ता महत्व*।
13. कृषिचानक्य (2022). *ड्रैगन फ्रूट की आर्थिक संभावना*।
14. सिंह, ए.के. (2023). *ड्रैगन फ्रूट की खेती और बाजार संभावनाएँ*. कृषि आज।
15. पटेल, आर. (2024). *ड्रैगन फ्रूट का पोषण महत्व*. फल-फूल पत्रिका।